

FA Part II (II)

Paper IV

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur  
Assistant Professor (CIT)  
Department of Sociology  
VCT College Rajkot

प्रश्नपत्री (Questionnaire) → साधारण शास्त्री में प्रयोग की जा सकती है। प्रश्नपत्री प्रायः एक प्रश्नों की रचना व्यवस्था है जिसमें उद्देश्य और उद्देश्य से सम्बन्धित व्यवहारों की जानकारी प्राप्त करने का उद्देश्य है।

गुड लथा हाई (Methods in Social Research) के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन का लाभपूर्ण प्रश्नों की उत्तरों को प्राप्त करने की रचना सेवी विधि से है जिसमें उत्तरात्म स्वयं ही एक प्रयत्न की अंतर्गत सुचारा बोधी करते हैं।

फैट-फायर फिन (Feet Finding with Rural People) के अनुसार, "अपने भरल तम कम से प्रश्नपत्री प्रश्नों की रचना सेवी, डांगुधूपी, हैमी-लैंग्शन की तरह एक जीपी ग्रैंड ग्रॉलिपन से सम्बन्धित व्यवहारों के पास एक छारा शैली जाती है।

वीजाइल्य (Sociology) के अनुसार, "प्रश्नपत्री प्रायः व्यवहारों की अवैधता के लिए उपर्युक्त जीपी प्रश्नों की सुची है।"

इतः स्पष्ट है प्रश्नपत्री के उपर्योग में डांगुधूपन तथा डॉक्टराइट की बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। डांगुधूपन तरीं ही ही बाईं आमतर प्रश्नों से जीपी ग्रैंड ग्रॉलिपन का सेवान् अप्रृष्ट रूप से ही जीपी ग्रैंड है।

प्रश्नपत्री की प्रश्नावली =) प्रश्नपत्री का उत्तर = को इसकी विवाहित  
प्रश्नावली को द्वारा सरलतापूर्वक समझा जा सकता है -

- (1) प्रश्नपत्री यशों की सूक्ष्म सेसी व्यवहारिक घुचा है जिसमें शोधपत्र दिया गया है कि जीवन-पर्वों में सम्बन्धित घुचाओं की प्राप्ति करने के लिए अनेक प्रश्नों को समाप्ति होती है।
- (2) प्रश्नावली उत्तरदाताओं के पास द्वारा दीवार की ओर छोड़ा जाता है तो कुछ विशेष परिविचारियों में इसका प्रितरण व्यक्तिगत रूप से भी जीवाज्ञ सकता है।
- (3) प्रश्नपत्री द्वारा किए गए जीवित व्याख्याएँ ही ही घुचाओं द्वारा ही की जा सकती हैं। जीविका व्याख्या न हो तो यशों को वह सभी हैं जो उन्होंने उत्तर दिया है। समझकर घुचाओं उत्तर दिया सकता है।
- (4) साधारणतया प्रश्नपत्री का उपर्याप्ति इसके क्षेत्र में केवल हुआ लिया जाता है कि घुचाओं द्वारा जारी की गई वह हुए होनी चाही जीवाज्ञ जाता है कि उस प्रथम कारण से वाक्यावलोकन और सज्जन अत्यधिक जोरिया हो सकता है।
- (5) प्रश्नपत्री की भाषा अत्यधिक सरल और सहज होती है जिससे उत्तरदाता प्रश्नों की सही उत्तर देने से समझकर उसका घुचाव उत्तर दिया कर सकते।
- (6) उत्तरदाता द्वारा यही ही प्रश्नपत्री को पढ़ शोधपत्रकर्ता के पास देकर द्वारा ही लौटाया लौटाया है प्रधान व्यापारियों द्वारा दी गयी इनकारा के लिए दोहरा दोहरा व्याख्याएँ दी जीवाज्ञ जो उन्होंना है।
- (7) कुछ विशेष प्रकार की शोधपत्रों में प्रश्नपत्री ही वह अत्यधिक उपयोगी है जिसमें उत्तरदाता ही जीवाज्ञ शोधपत्रकर्ता के उपरिकर्ता के लिए कोरकर्ता उत्तरदाता प्रश्नों की घुचाव जोर दीपकीय रूप से दें सकता है।